

2, 57. कामक्रोधादिप्रतिपत्तयुक्तत्रयमुद्वेष्ट्यात् PRAB. 31, 13. gegen Jmd (acc.): तथैव न च पश्यामि — य एनमुद्वेष्ट्यादथी MBH. 3, 1921. — 5) *einen Aufschwung nehmen*: एवमुद्यन्प्रभावण — राज्ञा राज्ञो बभूव सः RAGH. 17, 77. प्रहृषोदितचेतम् R. 1, 15, 24. स एक एव परमो नित्योदितो जम्भते BHARTH. 3, 41. — 6) उदित *in der Höhe befindlich oder ausgegangen* RV. 8, 92, 11: उदितो यो निदितो वेदितो वसु. — Hier und da wird उदित von इ mit उदित von वद् verwechselt.

— अन्नुद् nach Jmd aufgehen, — hinausgehen: अन्नु सूर्यमुदितो ह्यद्योतो हृदिमा च ते AV. 1, 22, 1. ÇAT. Br. 6, 7, 2, 4. ते ह ते शुचं पाप्मानमनुद्यति 7, 5, 2, 30. AIT. Br. 2, 19. — Vgl. u. उदा am Ende.

— अषोद् ausweichen, auf die Seite gehen: अषोदिकावा वा इदं ज्ञेय्याव इति AIT. Br. 4, 8. पथ एव नापोदित्यम् ÇAT. Br. 3, 5, 3, 9. तेभ्य एवैतत्पुनरपोदिति 2, 6, 1, 15. इमान्यवानाहिसतो अषोदिते AV. 6, 50, 1.

— अयुद् 1) *aufgehen*: अयुदितं रविम् MBH. 3, 867. 14443. R. 1, 19, 8. 2, 54, 1. 3, 17, 1. 22, 16, 19. प्रहृषणाऽयुदितेन 2, 114, 3. *erscheinen*, von Naturereignissen M. 4, 104. — 2) *in die Existenz treten, erstehen*: (प्रबोधे) अयुदिते PRAB. 116, 19. — 3) *über Jmd (acc.) aufgehen*, von der Sonne: उद्धृभि श्रुतामघमस्तारमेपि सूर्ये RV. 8, 82, 1. वर्चसा माऽयुदित्कि AV. 3, 20, 10. AIT. Br. 1, 3. न स्वपत्तमऽयुदियात् ÇAT. Br. 3, 2, 2, 27. 11, 1, 1, 1. 12, 4, 4, 7. 13, 8, 3, 2. KĀTĪ. ÇR. 21, 3, 14. 25, 4, 37. M. 2, 219. 220. तं चेज्जीवत्तमादित्यः प्रातरऽयुदिय्याति MBH. 4, 688. *pass.*: शयानो ऽभ्युदितश्च यः M. 2, 221. — 4) *sich gegen Jmd zum Kampf erheben*: लोकवीरान् — को जीवितार्थो समरे ऽभ्युदीयात् MBH. 3, 2010. को नाम शान्त्रस्य मकार्यस्य रणे समतं रथमऽयुदीयात् 10272. न हि ते पाण्डवाः सर्वे कलामर्कति योऽशीम् । अन्ये वा — राजानो ऽभ्युदितोदितः ॥ 15263. — Vgl. अयुद्यत् f.

— उपोद् zugehen auf: उपोदितं राजानम् AIT. Br. 8, 24.

— प्रोद् aufgehen: प्रोद्यदित्दु BHARTH. 1, 66. SĀH. D. 18, 21. प्रोद्यमाने R. 1, 19, 3 gehört zu वद्.

— प्रत्युद् *sich erheben und Jmd entgegen gehen; entgegen herausgehen*: कथं न प्रत्युदित्यच्च स्मयमाना यथा पुरा MBH. 13, 147. mit dem acc.: तं ज्ञानतीः प्रत्युदायन्नृपासः RV. 3, 31, 4. तमातिथेयो वहुमानपूर्वया सर्पयथा प्रत्युदियाय पार्वती KUMĀRĪS. 3, 31. *hinaufsteigen*: स प्रत्युदैद्दुरुणं मधो अग्रम् AV. 7, 3, 1.

— समुद् 1) *hinaufgehen*: समुदित *hoch, erhaben* KIRĀT. 3, 1, 4. — 2) *aufgehen*: आदित्यः समुद्यन् MBH. 3, 13757. 1, 6529. R. 2, 83, 9. समुदिते ऽकृन्नि 14, 40. *aufziehen* (von Wolken): घनैः समुदितैः 4, 27, 9. — 3) *aufstehen, sich zum Kampf erheben*: एकत्रार्यसमुद्यत्तौ कृत्वा MBH. 2, 791. पञ्चशरो भावरसानो सामग्र्यात्समुदितवल् इव मामतिमात्रमव्यययत् DAÇAK. in BENF. Chr. 190, 11. — 4) *in Gemeinschaft, in grosser Zahl zum Vorschein kommen*: युक्तं समुदितैर्गुणैः R. 2, 1, 26. समुदिता ब्राह्मणाः SIDDH. K. zu P. 6, 1, 39. — 5) *Jmd zu Theil werden*: समुदित *versehen mit Etwas*: सर्वैः समुदितो गुणैः (राजसूयः) MBH. 1, 128. 13, 1873. सर्वरत्नैः समुदितम् (पुरम्) ARĪ. 10, 10. R. 1, 19, 6. लक्ष्म्या समुदितो ब्राह्म्या 34, 43. विद्यासमुदित 24, 21.

— उप 1) *hinzugehen; an Jmd (acc.) herankommen* (freundlich und feindlich), *hinzutreten zu, an einen Ort hingehen, gelangen zu; sich nähern, gerathen in* RV. 2, 33, 12. समन्या यत्पुपं यत्पुन्याः (नद्यः) 35, 3, 3, 2, 9. गिरो म इन्द्रमुपं यति विद्यतः 31, 2. 5, 43, 1. 62, 4. 7, 1, 6. 37, 7. उपो एमि चिकितुषो विपृच्छम् 86, 3. 9, 69, 4. अथ पितृत्सुविद्वाँ उपैहि

10, 14, 10. अन्येषामस्तमुप नक्तमेति 34, 10. विप्रस्य जरणामुपेयुषः 39, 8. 102, 5. उपं यत्तु मृत्युम् AV. 6, 32, 3. 19, 49, 10. TS. 5, 7, 5, 4. ÇAT. Br. 1, 7, 1, 3. 8, 1, 1, 3. 4, 1, 5, 8. — यथा — वीरावुपेयाताम् R. 5, 56, 110. रक्षस्युपेत्य 1, 9, 9. सूर्ये राष्ट्रुपेय्यति MBH. 13, 13091. DAÇ. 2, 16. ÇĀK. 23, 11. शुभाशुभमात्मकम् — कृतात्तवशाडुपैति PAÑKĀT. II, 18. mit dem acc. der Person R. 4, 29, 26. 5, 60, 17. ÇĀK. 41, 1. 106, 22. VID. 161. 161. KATHĪS. 2, 17. लतामुपेत्य ÇĀK. 10, 23. 53, 1. रामस्य तं मकरिषमुपेत्युषः (!) R. 2, 54, 33. स तं परं पुरुषमुपैति BHAG. 8, 10, 15. 9, 28. अत्रैव प्रतितिष्ठति पुनरत्रैव यति (vgl. 3, 11855, wo उदयति) च । सत देवर्षयः MBH. 14, 781. ज्ञानस्थानमुपेतुः R. 3, 74, 1. 4, 41, 33. ÇĀK. 41, 11. सर्पो काचित् N. 10, 4. योगी परं स्थानमुपैति चाद्यम् BHAG. 8, 28. तेषाम् — वाममुपेत्य पार्श्वम् MBH. 3, 15673. मम मूलम् DAÇ. 2, 47. तव समीपम् ÇĀK. 139. अयः *sich in's Wasser begeben, sich baden* M. 6, 22. *coire cum femina*: रूकृणीमुपैत् TS. 2, 3, 5, 1. नागिं चित्वा रामामुपेयात् 5, 6, 8, 3. M. 11, 172. MBH. 1, 3457. 4090. SUÇR. 1, 316, 19. KATHĪS. 17, 129. वाद्यश्चानुपयन्पतिः M. 9, 4. *cum viro*: अत्यावशिष्टः कालो ऽयमतीरम् — न चान्यथाकृमिच्छामि त्वामुपैतुं कथं च न MBH. 3, 8592. 8586. *beim Lehrer in die Lehre treten* ÇAT. Br. 10, 6, 1, 2. 11, 4, 1, 9. 5, 3, 12. उप त्वायानि BRH. ĀR. UP. 2, 1, 14. 6, 2, 7. KĀND. UP. 4, 4, 3. 6, 1, 2. — 2) *antreten, begehen* (eine Handlung, Feier u. s. w.), *unternehmen, sich widmen*: यमग्ने यत्तमुपयति RV. 2, 2, 11. इन्द्रमनुतात्सत्यमुपैमि VS. 1, 5. 13, 51. व्रतं च अद्वाँ चोपैमि 20, 24. दीक्षांमुपैति AV. 9, 6, 4. ÇAT. Br. 3, 4, 3, 3. मिथुनम् 6, 2, 2, 39. तपः 3, 6, 2, 11. व्रतम् 1, 1, 1, 1. सन्नम् 11, 5, 5, 2. ब्रह्मचर्यम् 3, 3, 2. उपसद्म् AIT. Br. 1, 23. ÇAT. Br. 12, 1, 3, 6. — 3) *in ein Verhältniss oder in einen Zustand treten, sich hingeben, verfallen in, theilhaftig werden, erlangen*: आदिदेवानामुपे सद्यमोयन् RV. 4, 33, 2. दुःखमवोपयति ÇAT. Br. 14, 7, 2, 15. प्रजापतेः पितुर्दायमुपेतुः 1, 7, 2, 22. AIT. Br. 7, 17. पुरुषः पुरुषो निधनमुपैति P. 8, 1, 4, Sch. प्रायम् *sich dem Hungertode hingeben* R. 5, 15, 4. वधमुपेय्यति (sic) *in den Tod gehen, den Tod finden* PAÑKĀT. 52, 20. उपैतु यामं पुनरंसेलेन RAGH. 16, 81. सङ्गं न केनचिदुपेत्य PRAB. 117, 5. भेदम् *sich theilen* KUMĀRĪS. 2, 4. भिदाम् KIRĀT. 3, 43. तयम् AMAR. 60. दर्शनम् *sich zeigen* SĀMĀHJAK. 61. निद्रामुपेतस्य SĀH. D. 67, 15. सकृवर्सात्म् ÇĀK. 36. चित्तामुपेयिवान् (P. 3, 2, 109) MBH. 3, 2344. वाल्यमुपेत्युषः (!) R. 2, 21, 7. दोकृदुःखशीलताम् RAGH. 3, 6. RT. 6, 7. — 4) *zu Theil werden, zu fallen, widerfahren*: सकृन्नि उपं नो यत्तु वात्रोः RV. 1, 167, 1. उपो रयिर्न रतु 7, 84, 3. उद्योगिनं पुरुषसंक्रमुपैति लक्ष्मीः HIT. Pr. 30. योगिनं सुखमुत्तममुपैति BHAG. 6, 27. — 5) *für Etwas halten, ansehen*: विभावनादिव्यापारमलौकिकमुपेयुषाम् SĀH. D. 27, 5. BALLANTYNE: (in the eyes) of those who admit that the functions called Excitation, etc. are hyper-physical. — partic, उपेत 1) *herbeigekommen*: अद्दे नलम् । दमयत्या सकृपितं कल्पं द्रष्टु सुखोपितम् ॥ MBH. 3, 3003. अय्य मकृता देवाडुपेता विपत् PRAB. 75, 12. — 2) *sich vorfindend, vorhanden*: तत्रनुपेतान्यपयो दृष्ट्वा शोकं विहास्यति R. 3, 76, 13. कर्षणैर्विधोपैतिः 2, 80, 5. — 3) *begleitet von*: तंश्चानाद्य मठद्विजान् । सर्वोश्चक्रधरोपेतान् VID. 132. दैवं हि मानुषेयैतं भूषं सिध्यति MBH. in BENF. Chr. 56, 16. *versehen mit Etwas* (instr. oder im comp. vorang.): ह्यैरुपेतं प्रादान्मे रयम् ARĪ. 5, 13. नगरी सर्वशिल्पिभिः R. 1, 5, 17. अहया परया BHAG. 12, 2. गुणैः HIT. 23, 1. आयुधोपेत MBH. 3, 652. मकार्हाभरणो SUND. 1, 30. धान्यधना R. 2, 50, 8, 9, 91, 60. N. 13, 3. PAÑ-